मुग़ल शासन काल एवं युद्धों के परिदृश्यों की कलात्मक समीक्षा–

<u>प्रस्तावना</u> –

मुग़ल साम्राज्य की शुरुआत 1526ई० में हुयी, जिसने 18 वीं शताब्दी के शुरुआत तक भारतीय उपमहाद्वीप में राज्य किया था। मुग़ल साम्राज्य के शासन काल को भारत के इतिहास में स्वर्ण युग माना जाता है। इस समय में मुग़ल वंश के शासकों ने चित्रकला, स्थापत्य कला, भवन–निर्माण में बहुत अधिक विकास किए। मुग़ल काल प्रत्येक कार्य क्षेत्र में विकास का युग था।

मुग़ल साम्राज्य का प्रथम बादशाह बाबर और अंतिम बादशाह बहादुर शाह जफर था।

इस पत्रिका में मुगल वंश के शासको व उनके द्वारा किए गए प्रमुख युद्धों को कला के माध्यम से दर्शाया गया है।

<u>बाबर का शासन काल</u> – (1526ई० – 1530) :–

बाबर भारत में मुग़ल वंश का संस्थापक था जिसने लोदी राजवंश को खत्म कर मुग़ल वंश स्थापित किया। जिसका पूरा नाम जहिर उद–दिन मुहम्मद बाबर था।

जहाँ एक ओर वह नीति कुशल शासक और योद्धा था वहाँ दूसरी ओर एक अच्छा लेखक तथा कवि था। उसने स्वयं अपनी 'आत्म – कथा', 'तुजके बाबरी' या 'बाबर नामा' नामक पुस्तक तुर्की भाषा में लिखी। अपने संस्मरणों में बाबर ने फारसी कला की ओर विशेषतया 'बिहजाद' की आलेखन शैली की बडी ही समदृष्टि पूर्ण समीक्षा की है। बाबर ने अन्य चित्रकार 'शाह मुजफ्फर' के विषय में लिखा है वह अच्छे चित्रकार के साथ सादृश्य बनाने में निपुण था बाबर ने समरकन्द की मस्जिद का भी वर्णन किया है, जिसमें उन्होंने उसे चीनी चित्रों से सजा हुआ बताया हैं। उच्च कला व्यसन की इस विरासत को अपने पुत्र हुमायूँ के हाथों में सौंप कर सन् 1530 ई० को दिवंगत हुआ।

<u>बाबर के युद्ध</u> :–

<u>पानीपत का युद्ध</u> – 1526ई० :– बाबर का पहला युद्ध पानीपत का युद्ध था जो इब्राहिम लोदी के साथ 1526ई० में हुआ, जिसमें इब्राहिम लोदी को पराजय मिली। युद्ध का संचालन किस प्रकार हुआ इसका चित्रण बाबरनामा की सचित्रपोथी से प्राप्त होता है।

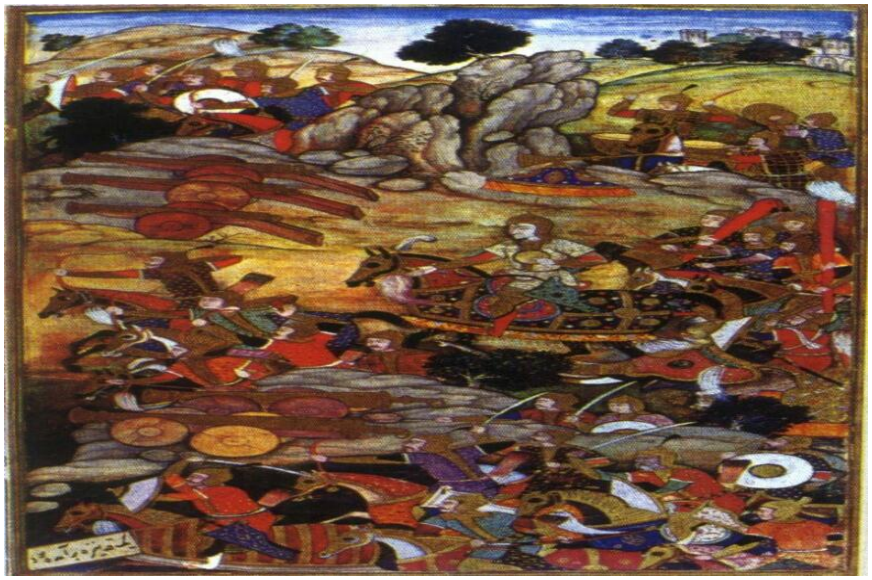

Randhawa, M.S., 1983, 'Painting of the Baburnama', First Print, National Museum, New Delhi, Vol XVIII, Pg.No. 52.

खानवा का युद्ध – 1527ई० :– यह युद्ध राणा सांगा एवं बाबर के मध्य हुआ। इस युद्ध में राणा सांगा के साथ, हसन खां मेवाती तथा महमूद लोदी अपनी अपनी सेनाओं के साथ थे। यह युद्ध सीकरी से मात्र कुछ दूरी पर था और यह मैदान खानवा का था, इसलिये इस युद्ध को 'खानवा' के युद्ध के नाम से याद किया जाता है। इस विजय के उपलक्ष्य में उसने राजपूतों के सिरों पर एक स्तूप बनवाया और गाजी की उपाधि धारण की।

बाबर के ये दो युद्ध ही ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।

चन्देरी का युद्ध – 1528ई० :– यह युद्ध मेदिनी राय और बाबर के मध्य हुआ था। जिसमें बाबर को विजय प्राप्त हुयी।

घाग्गरा का युद्ध – 1529ई० :– यह युद्ध महमूद लोदी और बाबर के मध्य हुआ था। जो कि बाबर ने जीता। सन् 1530 में बाबर की मृत्यु हो गयी।

हुमायूँ का शासन काल – (1530ई० – 1556) :–

बाबर का सबसे बडा बेटा हुमायूँ मुग़ल राजवंश का द्वितीय शासक बना उसने लगभग 1 दशक तक भारत पर शासक किया किन्तु फिर उसे अफगानी शासक शेरशाह सूरी ने पराजित किया। हुमायूँ अपनी पराजय के बाद लगभग 15 वर्षों तक भटकता रहा इस बीच शेरशाह सूरी की मौत हो गयी और हुमायूँ उसके उत्तरवर्ती सिकन्दर सूरी को पराजित कर दोबारा हिन्दुस्तान का शासक बना।

हूमायूँ के युद्ध :– (1530ई० – 1556)

1. सन् 1531 में हुमायूँ ने बिहार के सुल्तान महमूद लोदी को परास्त किया।
2. सन् 1535 में गुजरात के राजा बहादुर शाह को पराजित किया।
3. सन् 1536 में चम्पानेर पर विजय प्राप्त की।
4. सन् 1537 में बंगाल पर अधिकार किया।
5. सन् 1539 में शेरशाह सूरी ने हुमायूँ को चौसा के मैदान में पराजित किया।
6. सन् 1540 में शेरशाह सूरी ने पुनः कन्नौज में हुमायूँ को परास्त किया।
7. सन् 1555 में हुमायूँ ने सिकन्दर सूर को पराजित किया और दिल्ली फतह की।

इस प्रकार हुमायूँ ने अपने जीवन काल में अनेक युद्ध किये और सन् 1556 में उसकी मृत्यु हो गयी।

अकबर का शासन काल – (1556ई० – 1605) :–

जलाल उद्दीन अकबर जो साधारणतः अकबर और फिर बाद में अकबर एक महान के नाम से जाना जाता था वह भारत के तीसरे और मुगल के पहले सम्राट थे। वे 1556 से उनकी मृत्यु तक मुगल साम्राज्य के शासक थे। अकबर मुग़ल शासक हुमायूँ के बेटे थे। अकबर ने अपने राज्य में एक धार्मिक एकता बनाये रखने के लिए इस्लाम और हिन्दू धर्म को मिलाकर एक नया धर्म 'दिन ए इलाही' को बनाया।

उन्होने आमेर की रानी जोधबाई से विवाह किया और उनको धार्मिक स्वतन्त्रता दी। इस राजपूत रानी का पुत्र सलीम ही सिंहासन का उत्तराधिकारी बना। अकबर के दरबार में नौ उच्चकोटि के विद्धान थे। इन 'नवरत्नों' में अब्बुल फज़ल, फैजी, तानसेन, बीरबल अब्दुलरहीम खानखाना, टोडरमल, राजा मानसिंह, बिहारीमल तथा भगवानदास थे। अकबर ने साहित्यकारों, दार्शनिकों संगीतकारों तथा कलाकारों आदि में विशेष रूचि दिखाई जिसके फलस्वरूप अकबर के समय में प्रत्येक कला को प्रोत्साहन प्राप्त हुआ।

अकबर के युद्ध :– (1556ई० – 1605) :–

पानीपत का दूसरा युद्ध :–

1. अकबर का प्रसिद्ध युद्ध पानीपत में हेमचन्द्र उर्फ हेमू के बीच सन् 1556 में हुआ, जिसमें हेमू पराजित हुआ। इस जीत से अकबर को दिल्ली एवं आगरे पर अपना आधिपत्य करने का अवसर मिल गया।
2. सन् 1557 ई० कश्मीर के मान कोट दुर्ग में सिकन्दर सूर को पराजित किया।
3. उसी समय ग्वालियर एवं जौनपुर को जीता।
4. सन् 1564 में चित्तौड़ को जीता।
5. सन् 1569 में रणथम्भौर और कलिंग फतह किया।
6. इसी समय जोधपुर एवं बीकानेर जीता।

7. सन् 1573 में गुजरात जीता।
8. सन् 1576 में बंगाल जीता।
9. सन् 1576 में राणा–प्रताप को हल्दी घाटी के युद्ध में पराजित किया।
10. सन् 1576 से लेकर 1599 तक कश्मीर, सिन्ध, ओड़िसा, बलूचिस्तान एवं अहमदनगर जीता। युद्ध के इन तथ्यों को अकबर ने अपने ग्रन्थ 'अकबर नामा' में चित्रित कराया।

Kumar, Chandra, 'The Glory of India', C-1595 A.D. (Victoria and albert Museum London), Pg. No. 44.

इस प्रकार अकबर ने अपने जीवन काल में उपरोक्त युद्ध लड़े जिनमें पानीपत का युद्ध एवं हल्दी घाटी का युद्ध प्रसिद्ध हैं। सन् 1605 में अकबर की मृत्यु हो गयी।

जहाँगीर का शासन काल – (1605ई० – 1627) :–

अकबर के स्थान पर उसके बेटे सलीम ने तख्तोताज को संभाला, जिसने जहांगीर की उपाधि पाई, जिसका अर्थ होता है दुनिया का विजेता। वह हिन्दुओ, ईसाइयों तथा ज्यूस के प्रति उदार था। जहांगीर के शासन काल में कला, साहित्य और वास्तुकला फली–फूली और श्रीनगर में बनाया गया मुगल गार्डन उसकी कलात्मक अभिरुचि का एक स्थायी प्रमाण है। जहांगीर को फारसी और तुर्की भाषा का अच्छा ज्ञान था। जहांगीर ने अपनी आत्मकथा ' तुजुक–ए–जहांगीरी' लिखी थी। जिसे फारसी भाषा में लिखा गया है। जहांगीर को भी चित्रकला का अच्छा ज्ञान था इसलिए जहांगीर के शासन काल को चित्रकला का स्वर्णिम युग कहा जाता है। जहांगीर ने आगरा के नजदीक

सिकंदरा में 'अकबर का मकबरा' बनवाया था जिसका निर्माण कार्य अकबर ने शुरु करवाया परन्तु पूरा कार्य जहांगीर ने करवाया।

जहाँगीर के युद्ध – (1605ई० – 1627) :–

1. जहाँगीर और मेवाड़ के तत्कालीन राजा राणा अमर सिंह के मध्य 1605ई० से 1615ई० तक लगभग 18 युद्ध लड़ने के पश्चात संधि हुई।
2. सन् 1620 में उत्तरीपूर्वी पंजाब की पहाड़ियों पर स्थित कॉगड़ा के दुर्ग को जीतना जहाँगीर की उल्लेखनीय सफलता थी।
3. सन् 1616 अहमदनगर का युद्ध

सन् 1627 में जहाँगीर की मृत्यु हो गयी।

शाहजहाँ का शासन काल – (1627ई० – 1658) :–

शाहजहाँ का जन्म 1592 ई० लाहौर में हुआ शाहजहाँ का पूरा नाम अल् आजाद अबुल मुजफ्फर उद–दीन मोहम्मद खुर्रम था, शाहजहाँ पांचवाँ मुग़ल शंहशाह था। शाहजहाँ ने मुगलकालीन स्थापत्य एवं वास्तुकला की दृष्टि से अनेकों भव्य इमारतों का निर्माण करवाया था, जिस कारण से उसका शासनकाल मध्यकालीन भारत के इतिहास का 'स्वर्णकाल' कहा जाता है। शाहजहाँ ने अपनी बेगम मुमताज़ महल की याद में ताजमहल का निर्माण करवाया जो आज भी मध्यकालीन दुनिया के आश्चर्यो में गिना जाता है। शाहजहाँ अपनी न्यायप्रियता और वैभवविलास के कारण अपने काल में बड़े लोकप्रिय भी रहे।

शाहजहाँ के युद्ध – (1627ई० – 1658) :–

1. सन् 1631 में पुर्तगालियों को परास्त किया।
2. सन् 1633 में शाहजहाँ ने दक्षिण भारत के अहमद नगर पर आक्रमण कर उसे मुग़ल साम्राज्य का हिस्सा बनाया था।
3. सन् 1636 में शाहजहाँ ने बीजापुर पर आक्रमण किया तत्पश्चात् मुहम्मद आदिल शाह को संधि करने के लिए मजबूर कर दिया।
4. सन् 1636 में गोलकुण्डा पर आक्रमण किया और इस युद्ध में अब्दुला शाह को पराजय का सामना करना पड़ा।
5. सन् 1637 एवं 38 में कान्धार को जीता।

इस प्रकार शाहजहाँ ने अपने शासन काल में उपरोक्त युद्ध लड़े। सन् 1666 में शाहजहाँ की मृत्यु हो गयी।

औरंगजेब का शासन काल – (1658ई० – 1707) :–

औरंगजेब या आलमगीर (प्रजा द्वारा दिया हुआ शाही नाम जिसका अर्थ होता है विश्व विजेता) के नाम से जाना जाता था। भारत पर राज्य करने वाला छठा मुग़ल शासक था। वो अकबर के बाद सबसे ज्यादा समय तक शासन करने वाला मुग़ल शासक था। ग़ैर मुसलमान जनता पर शरियत लागू करने वाला वो पहला मुसलमान शासक था। औरंगजेब एक बहुत कट्टर शासक था, जिसने इस्लाम का कट्टरपंथी संस्करण अपने नाम कर दिया। औरंगजेब ने हिन्दुओं के मन्दिरों को भी तुड़वाया। औरंगजेब की बेरहमी और असहिष्णुता वाली नीतियों के कारण ही मुग़ल साम्राज्य कमजोर हो गया और पतन की ओर पहुँचा।

औरंगजेब के युद्ध – (1658ई० – 1707) :–

1. सन् 1665 में आसाम को जीता।
2. सन् 1686 में बीजापुर के शासक सिकंदर आदिल शाह ने आत्म–समर्पण कर दिया और बीजापुर पर मुग़ल साम्राज्य का आधिपत्य हुआ।
3. सन् 1687 में औंरगजेब ने गोलकुण्डा पर आक्रमण कर उसे भी मुगल साम्राज्य मे मिला लिया।

औरंगजेब सन् 1707 में, लगभग नब्बे साल की उम्र में मर गया। उसका साम्राज्य लम्बे समय तक उनकी मृत्यु के पश्चात् जीवित नहीं रह सका।

बहादुर शाह जफ़र का शासन काल – (1837ई० – 1857) :–

बहादुर शाह जफ़र भारत के अन्तिम मुग़ल सम्राट थे जिनका जन्म 1775 में दिल्ली में हुआ था। उनका नाम अबू जफर सिराजुद्दीन मुहम्मद बहादुर शाह जफ़र रखा था। बहादुर शाह जफर के शासनकाल के दौरान, उर्दू शायरी विकसित हुयी और अपने चरम पर पहुँच गयी। लेकिन लोगो से टैक्स वसूल कर अपने साम्राज्य का विस्तार करने की उन्हें इजाजत दी गयी थी। इसके साथ उन्हें थोड़ी बहुत पेंशन भी मिलती थी। जफर की वजह से ब्रिटिश शासकों को भारत में ज्यादा तकलीफ नहीं हुई क्योंकि जफ़र अपने ही राज्य में खुश थे और उनका कोई लक्ष्य भी नहीं था। वे अंतिम और सबसे कमजोर मुग़ल शासक थे। उनका साम्राज्य समृद्ध और विकसित नहीं था।

बहादुर शाह जफर का 1857 का युद्ध :–

सन् 1857 में भारतीय विद्रोह के दौरान जफर ने एक प्रमुख भूमिका निभायी थी और वह ब्रिटिश शासन से भारत की आजादी के लिए लड़े। विद्रोह की असफलता के बावजूद क्रांतिकारी बहादुर शाह जफ़र को ही भारत के सम्राट रुप में मानते रहे।

इस असफल क्रान्ति के नायक बहादुर शाह जफ़र को हुमायूँ के मकबरे में छिपना पड़ा परन्तु अंग्रेज कैप्टन हडसन ने उसे वहाँ से गिरफ्तार कर बन्दी बना लिया और रंगून की जेल में भेज दिया जहाँ उनकी 1862 में मृत्यु हो गयी।

निष्कर्ष :–

इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि मुग़ल शासन काल भारत का स्वर्णिम युग रहा। इस काल में भारत में कला, संस्कृति और स्थापत्य कला का विकास चरम पर रहा अकबर के शासनकाल में जहॉ सभी धर्मो को समानता का अधिकार मिला वहीं औरगजेब के शासन काल में इस्लाम धर्म काफ़ी फला–फूला। इसी शोध अध्ययन में मुग़ल शासन काल में हुए प्रमुख युद्धों के परिदृश्यों का अध्ययन व चित्रण किया गया है जिसमें बाबर के द्वारा किया गया पानीपत के युद्ध का संचालन 'बाबरनामा' की सचित्रपोथी में चित्रित है। अकबर द्वारा किए गए युद्धों के बारे में उसने अपने ग्रन्थ 'अकबरनामा' में चित्रित करवाया।

सन्दर्भ सूची –

1. पाण्डे, नेत्र, 1970–71, 'भारत का वृहद् इतिहास' (द्वितीय भाग) स्टूडैन्ट फैण्डस्, प्रयाग, अष्टम् संस्करण, पृ०सं० – 17,24,145–146,158
2. थपल्लियाल, हरिप्रसाद, 1993, 'भारत की ऐतिहासिक मानचित्रावली', हिन्दी प्रचारक संस्थान, काशी, प्रथम संस्करण, पृ०सं० 44–46
3. खुराना, के०एल०, 2006, 'इतिहास लेखन, धारणाएँ तथा पद्धतियाँ', लक्ष्मी नारायण अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा, तृतीय संस्करण, पृ०सं० 150–154
4. वर्मा, अविनाश बहादुर, 1997 भारतीय चित्रकला का इतिहास, 'प्रकाश बुक डिपो, बड़ा बाजार, बरेली, नवम संस्करण, पृ०सं० – 130–135, 143–147
5. प्रताप, रीता, 2017, भरतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 28 वाँ संस्करण, पृ०सं० 130–131, 143–144, 152, 158

चित्र सूची :–

1. Randhawa, M.S., 1983, 'Painting of the Baburnama', First Print, National Museum, New Delhi, Vol XVIII, Pg.No. 52.
2. Kumar, Chandra, 'The Glory of India', C-1595 A.D. (Victoria and albert Museum London), Pg. No. 44.